SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

गीतों में अभिव्यक्त आदिवासी लोकजीवन: 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ' (महुआ माझी) के सन्दर्भ में

KAPIL KUMAR SAINI[1] DR. RAKESH KUMAR SINGH[2]

[1]Research Scholar, Guru Kashi University Talwndi Sabo, Guru Kashi University Talwndi Sabo, Bathinda,Punjab
[2]AssociateProfessor, Guru Kashi University Talwndi Sabo, Guru Kashi University Talwndi Sabo, Bathinda,Punjab

सार

साहित्य और संगीत का अटूट संबंध है। साहित्य लोक-जीवन की अनुभूति है, वहीं संगीत अपनी लयात्मकता से इसमें रस भरता है। जब यही रसात्मकता साहित्य का संस्पर्श पाती है, तो उसे रूचिकर ही नही, बल्कि उसमें एक विशेष भावप्रवणता का भी समावेश करती है। साहित्य और संगीत के संबंध को विवेचित करते हुए मुकेश गर्ग में 'साहित्य और संगीत(खण्ड-1) के प्राक्कथन में लिखा है- "कौन ऐसा साहित्यकार है जो संगीत की चर्चा न करता हो या उसमें दिलचस्पी न लेता हो ? और कौन ऐसा संगीतज्ञ है, जिसे साहित्य की दरकार न हो।"[1] काव्य के साथ-साथ गद्य में भी संगीत का महत्व निरन्तर प्रतिपादित होता आ रहा है। 21वीं सदी के कथाकारों ने लोक गीतों के माध्यम लोक जीवन से जुड़े पहलुओं को विभिन्न रंगों में रूपायित किया है। महिला कथाकार और राज्यसभा सांसद महुआ माझी ने आदिवासी जीवन और उसके संघर्ष पर आधारित उपन्यास 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ' में गीतों में माध्यम से आदिवासी लोक जीवन को मुखरित किया है। उनके गीतों में आदिवासी जीवन के राग-विराग, हर्ष-विषाद तथा जीवन की विभिन्न स्थितियों को वाणी दी गई है।

बीज शब्द: *गीत, आदिवासी, लोक जीवन*

भूमिका

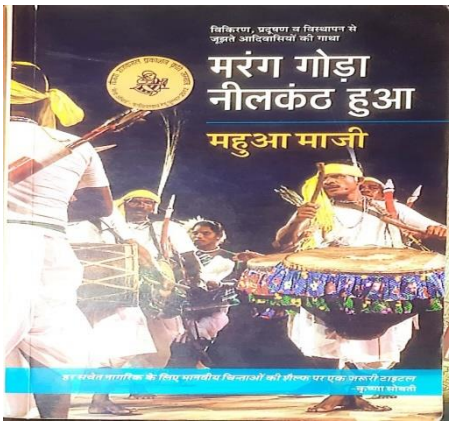

उपन्यास साहित्य मानव के समग्र जीवन को यथार्थ रूप में विवेचित-विश्लेषित करता है। भारतेन्दु युग से 21वीं सदी तक के उपन्यासों में संगीत का पुट लोक गीतों एवं लोक काव्य के रूपों में अभिव्यक्त होता आया है। इस सदी में अनेक कथाकारों ने अपने साहित्य में आँचलिकता और लोकतत्व को बड़ी बारिकी के साथ चित्रित किया है। कथाकारों ने आदिवासी लोक-संस्कृति का चित्रण भिन्न-भिन्न रूपों में किया है। आदिवासी जीवन की त्रासदी और संघर्षमय जीवन को 21वीं सदी की प्रख्यात लेखिका महुआ माझी ने अपने उपन्यास 'मरंग गोंडा नीलकंठ हुआ' में यथार्थ रूप में चित्रित किया है। विवेच्य उपन्यास का मुख्य विषय आदिवासी संघर्ष और यूरेनियम विकिरण के विश्वव्यापी दुष्प्रभाव को दिखाना है। इसके साथ ही लेखिका ने उपन्यास में गीतों के माध्यम से आदिवासी लोक जीवन को बड़ी संजीदगी के साथ उकेरा है। ये लोकगीत उनके जीवन का अभिन्न अंग है, जिससे उनके हर सुख-दुख, तीज-त्यौहार, विवाह-शादी और संघर्ष को आन्तरिक संबंध है। लेखिका ने उपन्यास के प्रमुख पात्र जाम्बीरा और उसके पोते सगेन के माध्यम से सम्पूर्ण उपन्यास की कथा को संगीतमय बनाते हुए विभिन्न प्रसंगों से जुड़े गीतों का मणिकांचन प्रयोग किया है।

'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ' में गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त आदिवासी लोकजीवन

आदिवासी लोग प्रकृति की गोद में रहते हुए जल, जंगल और जीवन की अवधारणा के सजीव रूप को अपनी जीवन शैली और उससे जुड़े विभिन्न पहलुओं के माध्यम से मुखरित करते हैं। विवेच्य उपन्यास में लेखिका ने आदिवासी जीवन से जुडे आन्तरिक स्वरुप को बड़े करीने को साथ चित्रित किया है। उपन्यास की पृष्ठभूमि में सारंडा का जंगल और 'हो' आदिवासी जनजाति से जुडे लोकजीवन तथा आजीवन चलते आ रहे संघर्ष को रखा गया है। जाम्बीरा 'हो' आदिवासी जनजाति का एक संघर्षशील और मेहनतकश पुरुष है और उसे अपको अपनी जाति और उसके गौरव पर पूरा नाज़ है। जाम्बीरा और मेन्जारी में प्रेम और उसके साथ उनके विवाह से जुड़े खट्टे-मिट्ठे प्रसंगों को लेखिका ने गीतों के साथ जोड़कर जहाँ आदिवासी लोक जीवन की झाँकी प्रस्तूत की है, वहीं इसमें एक अलग प्रभावोत्पादकता का भी समावेश किया है। लेखिका में उपन्यास में सबसे पहला गीत आदिवासियों के आदि पुरुष एवं पूर्वजों से जुड़ा है जो एक प्रेरणादायक गीत है। जरम्बीरा मन्जारी

को अपने पूर्वजों की वीरता से जुड़े गीतों क बारे में बताता है तो मेन्जारी पुछती है- ‘‘कौन सा गीत?...‘‘ मेन्जारी ने उत्सुकता दिखाई तो जाम्बीरा ने गाकर सुनाया-

‘सिंहभूमि हसा रेबु जोनोम लेना,
सिगकन पाइटिबु रिकायगेया,
जनम नेनगा दिशुमनेलगा,
किलिमिलिबु सेबा सिंगारेया...

(‘हम लोगों ने सिंहों के इस देश में जन्म लिया है। हम लोगों को ताकतवर सिंहों की तरह कर्म करना चाहिए। आओ, आओ हम इस सिंहभूम की सेवा करें और अच्छाइयों से इसे संवारे...‘)”[2]

पारिवारिक अथवा सामाजिक उत्सवों में संगीत का बड़ा महत्व है, विशेषकर लोक गीतों का। उपन्यास में प्रमुख पात्र जाम्बीरा और मेन्जारी के विवाह से जुड़े कई गीतों को संजोकर लेखिका ने आदिवासी रीति-रिवाजों एवं आत्मीय क्षणों को बड़ी सहजता के साथ चित्रित किया है। लड़की लेने बरात में गये लडकों ने डीयंग (शराब) पीते और मीट भात खाते हुए हँसी मजाक में व्यंग्यात्मक गीत गाया-‘‘

‘देला बालानेरा नाजी नानर डियंग, दाना बालानेरा जगादाअ डियंग,
नजी नानर डियंग कामनेमेरे, जगादाअ डियंग कामनेमेरे।
हुड़िं होनमे नेरा नेमालेमे, मालची रेहोले मालची मीसाईहा,
बुलुं रेहोले बुलु मिसाई, पाकड़ मान्डीले चाहकातीहा ।

(बड़ी बहन के नाम से जो डियंग बना है, उसे तो हम लोगों को दे दें। साथ ही आपके उपजाऊ खेत के चावल से जो डियंग बना है, उसे भी हम लोगों को दे दें। अगर आप लोग उन दोनों प्रकार के डियंग को नहीं दे सकते हैं तो वधू की छोटी बहन को ही दे दीजिए, जिसे ले जाकर हम लोग नमक मिर्चा लगाकर चखेंगे।)”[3]

लेखिका दिखाती है कि शादी के आनंद में घर के सभी लोग झूम-झुम कर गीत गा रहे हैं। लड़के की और से शरारत करती हुई घर मे सभी महिलाएँ लड़की को तैयार करती हुए उसे चिढ़ाने के लिए काजल लगाती हुई गीत गाती हैं-

‘‘कजोड़ा अइ मे मइ कजोड़ा अइ मे।
केड़ा मेड लुन्डुकुड रे कजोड़ा अइ मे।
(काजल लगाओ मइ, काजल लगाओ। भैंस की तरह जो उभरी हुई आंखें हैं, उनमें काजल लगाओ।)‘[4]

तो दूसरी और लेखिका ने लड़की के घर से आए लोगों की चंचलता एवं हँसी मजाक को भी गीत के माध्यम से व्यक्त किया गया है। ये सब सुनकर लड़की के घर से आए सरातियों को भी तैश आ गया और जैसे ही जाम्बीरा ने मेन्जारी की मांग में सिंदूर भरा और जवाब में मेन्जारी ने उसी सिंदूर से जाम्बीरा के चैड़े माथे पर टीका लगाया, तो वे गा उठीं-

‘‘सिंदूरी मे मइ सिंदूरी मे हाथी समंग डंग डंग रे सिंदूरी मे।
(सिंदूर लगाओ मइ, सिंदूर लगाओ। हाथी जैसे चैड़े कपार पर सिंदूर लगाओ।)”[5]

इस प्रकार गीत-संगीत मानव व्यवहार का एक अभिन्न अंग है। संगीत जीवन को आनन्दमयी तो बनाता ही है, साथ-साथ जन-मानस हृदय को भावविभोर भी करता हैं। लेखिका ने मानव और संगीत के संबंध को दृढ़ता प्रदान करते हुए अपने उपन्यास को लोकगीतों से मिश्रित कर उसे अधिक प्रभावशाली बनाया है। आदिवासी लोकव्यवहार में गीत अपना अलग महत्व रखते है।

‘मैला आँचल‘ से लेकर 20वीं सदी के ‘चाक’ उपन्यास तक यह गीत-संगीत की धारा निरन्तर प्रवाहित होती रही है। ‘चाक’ उपन्यास लोक गीतों की दृष्टि से एक श्रेष्ठ उपन्यास कहा जा सकता है। इसी तरह विवेच्य उपन्यास ‘मरंग गोंडा नीलकंठ हुआ’ भी लोक गीतों को अपने में संजोये हुए है। उपरोक्त गीतों की ही भांन्ति उपन्यास अनेक ऐसे मनोरम प्रसंग है जिनको गीत के साथ जोड़कर लेखिका ने उसकी प्रभावशीलता एवं भाव सम्प्रेषणीयता में उत्तरोत्तर वृद्धि की है। उपन्यास के अन्य महत्वपूर्ण पात्र सगेन के जीवन सन्दर्भ में प्रेम का चित्रण करते हुए उसकी

प्रेमिका चारिबा और उसके ततंग (दादा) के साथ बैठे दोनों डीयंग पी रहे हैं। तीनों को डीयंग की तीखेपन के कारण नशा चढ़ने लगता है, साथ ही महुआ के फूलों की सुगन्ध उस नशे को और अधिक मादक बना रही है और अचानक चारिबा का तंतग मस्ती में डूबते हुए अपनी नशीली आवाज से गा उठता है-

''नीदार माई तुरुई सिका सुनूपीड,
नीदार माई लान्दा दारोमायं,
नीदार माई रेसे पेसे रांगा धोती,
नीदार माई रेसे रेसे अयंअः...
लेः लेः लेए, लेः लेः लेए... लेः लेः लेए, लेः लेः लेए.....।

(उस लड़की ने डेढ़ रुपये का (कीमती) जूड़ा बनाया है, वही लड़की मुस्कुराती हुई मेरा स्वागत कर रही है, वो लड़की छापेदार रांगा धोती पहनी है, वही लड़की अपने दांत दिखाती हुई (मुस्कुराती हुई) मेरा स्वागत कर रही है।... लेः लेः लेए, लेः लेः लेए... लेः लेः लेए, लेः लेः लेए...।) ''[6]

उपरोक्त लोकगीतों में लेखिका ने गीतों में मिश्रित नाद, लय-ताल के साथ ही ध्वनि साम्य पर भी जोर दिया है। लोकगीत क्योंकि पूर्णतः मौखिक होते हैं तथा उनमें इस प्रकार के नाद और ध्वनी साम्य को बड़ा महत्व दिया जाता है। नाद को संगीत में महत्वपूर्ण मानते हुए यशपाल शर्मा ने लिखा है-''संगीत कला की अभिव्यक्ति का माध्यम स्वर है, जो श्रुतियों पर आधारित है। श्रुतियाँ पुनः नाद पर आधारित हैं। इस प्रकार परोक्ष रूप में संगीताभिव्यक्ति का माध्यम 'नाद' हुआ, क्योंकि नाद से ही स्वरों का आविर्भाव होता है।''[7]

श्रुतियों की ही भाँति लोकसंगीत भी इसी का दूसरा रूप कहा जा सकता है। यशपाल शर्मा का मानना है कि-'' भारतीय कला शास्त्र में आधुनिक समय में पाँच ललित कलाओं का समावेश किया जाता है-साहित्य, संगीत, चित्र, मूर्ति एवं वास्तुकला। ये सभी कलाएँ उक्त क्रमानुसार सूक्ष्म से स्थूल की ओर दृष्टिगोचर होती है। उपर्युक्त सभी कलाओं की अभिव्यक्ति हेतु कोई न कोई माध्यम शास्त्रों में स्वीकार किया गया है। माध्यम के द्वारा ही कलाकार अपने श्रोताओं अथवा दर्शकों तक कला संचार करता है। साहित्य-कला में यह माध्यम शब्द है, संगीत में स्वर, चित्र में रेखाएँ, मूर्ति एवं वास्तु कलाओं में धातु, लकड़ी, पत्थर इत्यादि।''[8]

संगीत और साहित्य के संबंध के साथ-साथ संगीत और प्रेम का संबंध भी उपन्यास में चित्रित किया गया है। आदिवासी लोग आम जन से इतर प्रेम और आत्मीय अनुभूतियों को बड़ा महत्व देते हैं। उपन्यास में चारिबा और सगेन एक दूसरे प्रेम व्यवहार करते दिखाए है। कहीं तो चारिबा अपने बालों की संवारती है तो सगेन उसके बालों के खुपे (जुड़े) में फूल लगाता है। दोनों को एक दूसरे के साथ प्रेम-प्रणय करते हुए सगेन गुनगुनात दिखाया है-

''होरा रे सरजोम बा, लेसे केन लेसे केन।
होरा रे हेन्दे हापानुम, मोचो केन मोचो केन ।।...
(रास्ते में साल के फूल लहरा रहे हैं, लहरा रहे हैं। रास्ते में कुवांरी सांवली लड़की मुस्कुरा रही है, मुस्कुरा रही है।)''9

सगेन-चारिबा एक दूसरे के प्रेम में पागल है। उनके परिवार में भी इसका सबको पता है। सुगेन अपनी मातृभूमि से भी प्रेम करता है और यूरेनिय विकिरणों के दुस्प्रभावों को झेलते-झेलते आदिवासियों का जीवन दूभर हो चुका है। आदिवासी इसके विरुद्ध संघर्षरत है और सगेन इसमें उनकी अगुवाई करता है। सगेन के प्रयासों से आदिवासी गांवों के लोग एकजुट होकर इनका विरोध करते है, तो लेखिका ने इस विरोध के स्वर को भी गीत एवं लय-ताल में बाँधने की प्रयास किया है। आदिवासी अपने अस्त्र-शस्त्रों के साथ कम्पनि के लोगों एवं पुलिस की कार्यवाही का विरोध करते हुए गीत गाते है-

''दुनिया वालों सुन लो आज.... ''
सुन लो आज, सुन लो आज... ''
''हमारे गांव में हमारा राज... ''
''हमारा राज, हमारा राज... ''

''इनकलाब जिंदाबाद... ''
''जिंदाबाद जिंदाबाद... ''
''जल जंगल जमीन हमारा है... ''
''हमारा है, हमारा है... ''
''हमें हमारा घर, वापस करो... ''
''वापस करो, वापस करो... ''
''हमारा खेत वापस करो... ''
''वापस करो, वापस करो...। ''[10]

इस प्रकार लेखिका ने अपने उपन्यास में आदिवासी लोक जीवन और उससे जुड़े अनेक प्रसगों को रीति-रिवाज, शादी-विवाह को अनेक गीतों के माध्यम से विशेष अभिव्यंजना शैली में रूपायित किया है, जिससे पता चलता है कि गीत-संगीत मानव जीवन की एक अनिवार्य और महति आवश्यकता है, जिससे मानव तनाव रहित हो अपने को उत्तम जीवन के लिए तैयार करता है और संगीत के माध्यम से उसका यह मन्तव्य पूर्ण होता है। संगीत को शव्दों में बाँधते हुए कृष्ण चन्द्र शर्मा लिखते हैं -''संगीत, प्रकृति के झरनों व पहाड़ों का उल्लास, नदियों के कल-कल बहते पानी का यौवन, पक्षियों की चहचाहट और कराहट और अपने वक्ष को काटकर मैदानों को उपजाऊ मिट्टी बाँटने वाली घाटियों का विरह तथा जीवन के रेगिस्तान में अपने सूनेपन को प्रेयसी या ईश्वर के दीदार से भरने की खोज में अमरत्व की तलाश करते हुए मानव बासुरी, बीन, वीणा और सारंगी के सुरों का एक आलम है। ''11

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि महआ माझी ने अपने उपन्यास मरांगोंडा नीलकंठ हुआ में आदिवासी जीवन से जुड़ी व्यथा-कथा तथा उनके संस्कृति में निहित विभिन्न आन्तरिक विशेषताओं को गीतों के माध्यम से एक मार्मिक अभिव्यंजना दी है तथा अपने उपन्यास को संगीत से जोड़कर एक विशेष स्वरूप देने का प्रयास किया है। गीत संगीत प्रारंभ से ही मानव के लिए मनोरंजन का महत्वपूर्ण साधन माना जाता रहा है, इसी कारण उपन्यास के मुख्य विषय के साथ-साथ गीतों के माध्यम से लेखिका ने आदिवासी लोग जीवन की सुंदर अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है।

सन्दर्भ

1. गर्ग, मुकेश(2014); संगीत और साहित्य, खण्ड-1; वाणी प्रकाशन; दरियागंज, नई दिल्ली, , पृ0-प्राकथन से
2. माझी, महुआ(2015); मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ; राजकमल प्रकाशन; दरियागंज, नई दिल्ली, , पृ0-29
3. वही, पृ0-35-36
4. वही, पृ0-37
5. वही, पृ0-37
6. वही, पृ0-145
7. शर्मा, यशपाल(2017); भारतीय संगीत में श्रुति; कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, , पृ0-01
8. शर्मा, यशपाल(2017); भारतीय संगीत में श्रुति; कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, , पृ0-01
9. वही, पृ0-154
10. वही, पृ0-169
11. शर्मा, कृष्ण चन्द्र(2001); कविसूर्य लखमीचन्द; हरियाणा पब्लिकेशन ब्यूरों, अम्बाला छावनी, हरियाणा, पृ0- 63